About the Book

यह किताब खास तौर पर मध्य प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर (SI) सूबेदार / प्लाटून कमांडर / उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी के लिए बनाई गई है। इसमें परीक्षा के संपूर्ण पाठ्यक्रम के अनुसार सभी महत्वपूर्ण विषय—हिंदी, English, विश्लेषणात्मक क्षमता, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, नागरिक शास्त्र, कम्प्यूटर और तर्कशक्ति—को शामिल किया गया है। यह किताब अभ्यर्थियों को परीक्षा के प्रत्येक भाग में मजबूत पकड़ बनाने में मदद करती है।

किताब की मुख्य विशेषताएँ –

- **संपूर्ण थ्योरी** – इस पुस्तक में NCERT कक्षा 6 से 12 तक की पुस्तकों के महत्वपूर्ण अंश और सूबेदार / प्लाटून कमांडर / उप निरीक्षक परीक्षा के नवीनतम सिलेबस पर आधारित सामग्री को सरल व सटीक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।
- **1900+ महत्वपूर्ण प्रश्न** – प्रत्येक विषय से संबंधित अध्यायवार प्रश्न शामिल किए गए हैं, जो परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के अनुरूप हैं।
- **नवीनतम पैटर्न आधारित कंटेंट** – सभी विषयों की सामग्री पूरी तरह से मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल द्वारा जारी नवीनतम परीक्षा पैटर्न और सिलेबस के अनुसार तैयार की गई है।
- **अपडेटेड कंटेंट** – 100% अपडेटेड व विश्वसनीय सामग्री दी गई है, जिससे विद्यार्थी को सही दिशा में तैयारी करने में मदद मिलती है।
- **सेल्फ-स्टडी के लिए उपयुक्त** – आसान भाषा, स्पष्ट व्याख्या और व्यवस्थित प्रस्तुति के कारण यह किताब बिना किसी अतिरिक्त सहायता के भी आत्म-अध्ययन के लिए उपयुक्त है।

यह किताब उन अभ्यर्थियों के लिए बेहद उपयोगी है जो मध्य प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर (SI) सूबेदार / प्लाटून कमांडर / उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी की शुरुआत कर रहे हैं या अंतिम रिवीजन करना चाहते हैं। यह आपकी तैयारी को मजबूत बनाती है और सफलता की संभावनाओं को बढ़ाती है।

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB2157

मध्य प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर (SI) सूबेदार / प्लाटून कमांडर / उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा स्टडी बुक
ISBN - 978-93-6890-315-4
₹ 599

मध्य प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर (SI) सूबेदार / प्लाटून कमांडर / उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा स्टडी बुक
CB2157
AGRAWAL EXAMCART

मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मण्डल द्वारा आयोजित

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

मध्य प्रदेश पुलिस

सब-इंस्पेक्टर (SI)

सूबेदार / प्लाटून कमांडर / उप निरीक्षक

भर्ती परीक्षा

संपूर्ण पाठ्यक्रमानुसार

स्टडी बुक

इतिहास । भूगोल । नागरिक शास्त्र । विज्ञान । तर्कशक्ति । विश्लेषणात्मक क्षमता । हिंदी । English । कम्प्यूटर

100% UPDATED CONTENT
जब अपडेटेड कंटेंट पढ़ोगे, तभी परीक्षा Crack करोगे!

मुख्य विशेषताएँ

1. संपूर्ण थ्योरी
NCERT कक्षा 6th से 12th तक पाठ्यपुस्तकों तथा उप निरीक्षक / सूबेदार / प्लाटून कमांडर परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित थ्योरी

2. 1900+प्रश्न
अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्न

अब तैयारी
अजय भैया के साथ!
DIRECTOR-PARIKSHA PORTAL

Code	Price	Pages	ISBN
CB2157	₹599	583	978-93-6890-315-4

विषय सूची

परीक्षा से सम्बन्धित जानकारी (Exam Information)

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** x
(मध्य प्रदेश पुलिस सब–इंस्पेक्टर (SI) सूबेदार/प्लाटून कमांडर/उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

➔ **परीक्षा पैटर्न** xi

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
1. इतिहास			
1.	प्राचीन भारत का इतिहास	25	1-8
2.	मध्यकालीन भारत का इतिहास	25	9-18
3.	आधुनिक भारत का इतिहास	25	19-31
4.	कला एवं संस्कृति	26	32-57
2. भूगोल			
5.	भारत का भूगोल	25	58-70
6.	विश्व का भूगोल	24	71-81
7.	पर्यावरण	25	82-93
3. नागरिक शास्त्र			
8.	भारतीय संविधान	29	94-118
4. विज्ञान			
9.	भौतिक विज्ञान	25	135-164
10.	रसायन विज्ञान	20	165-188
11.	जीव विज्ञान	28	189-217
	प्रश्न संख्या : 277		

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
5. मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान			
1.	मध्य प्रदेश : एक दृष्टि में	5	1-3
2.	मध्य प्रदेश : ऐतिहासिक परिदृश्य	4	4-9
3.	मध्य प्रदेश : कला एवं संस्कृति	6	10-14
4.	मध्य प्रदेश : अनुसूचित जातियाँ एवं जनजातियाँ	4	15-16
5.	मध्य प्रदेश : भौगोलिक परिदृश्य	5	17-18
6.	मध्य प्रदेश : जलवायु	5	19-20

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
7.	मध्य प्रदेश : कृषि एवं पशुपालन	5	21-26
8.	मध्य प्रदेश : अपवाह तन्त्र एवं नदियाँ	5	27-29
9.	मध्य प्रदेश : राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य	5	30-32
10.	मध्य प्रदेश : खनिज सम्पदा	5	33-34
11.	मध्य प्रदेश : ऊर्जा संसाधन	3	35-36
12.	मध्य प्रदेश : जनगणना–2011	5	37-41
13.	मध्य प्रदेश : पर्यटन	5	42-45
14.	मध्य प्रदेश : खेलकूद	4	46-47
15.	मध्य प्रदेश : प्रमुख व्यक्तित्व	4	48-49
16.	मध्य प्रदेश : विविध	5	50-51
17.	मध्य प्रदेश : आर्थिक सर्वेक्षण 2025	—	52-56
	प्रश्न संख्या : 75		

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
6. तर्कशक्ति			
1.	अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण	14	1-3
2.	सांकेतिक भाषा परीक्षण	15	4-6
3.	सादृश्यता परीक्षण	11	7-9
4.	वर्गीकरण	10	10-11
5.	शब्दों का तार्किक क्रम	13	12-13
6.	औपबंधित संख्या, अक्षर एवं प्रतीक ज्ञात करना	16	14-16
7.	रक्त सम्बन्ध	10	17-18
8.	दिशा परीक्षण	15	19-22
9.	शृंखला परीक्षण	14	23-24
10.	लुप्त पद ज्ञात करना	13	25-26
11.	पासा	15	27-29
12.	घन एवं घनाभ	11	30-32
13.	गणितीय संक्रियाएँ	14	33-36
14.	असमानता	13	37-40
15.	वेन आरेख	15	41-44
16.	न्याय संगत	13	45-47
17.	कैलेण्डर	15	48-51
18.	अंकगणितीय तर्कशक्ति	10	52-53

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
19.	आकृति सादृश्यता	10	54-57
20.	आकृति शृंखला	11	58-60
21.	सन्निहित आकृतियाँ	11	61-62
22.	कागज काटना और मोड़ना	11	63-64
23.	दर्पण और जल प्रतिबिम्ब	11	65-66
24.	आकृति पूर्ण करना	11	67-68
25.	आकृतियों को गिनना	10	69-73
26.	कथन एवं निष्कर्ष	12	74-75
27.	कथन एवं तर्क	7	76-78
28.	कथन एवं पूर्वधारणाएँ	5	79-81
	प्रश्न संख्या : 336		

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
7. विश्लेषणात्मक क्षमता			
1.	संख्या पद्धति	20	1-3
2.	म.स.प. और ल.स.प.	16	4-7
3.	वर्ग-वर्गमूल और घन-घनमूल	20	8-10
4.	घातांक एवं करणी	20	11-12
5.	भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ	17	13-15
6.	सरलीकरण	20	16-18
7.	औसत	17	19-21
8.	अनुपात एवं समानुपात	14	22-25
9.	प्रतिशतता	16	26-29
10.	लाभ-हानि एवं बट्टा	19	30-31
11.	मिश्रण	20	32-34
12.	समय और कार्य	14	35-38
13.	साधारण ब्याज	12	39-41
14.	चक्रवृद्धि ब्याज	17	42-46
15.	समय, चाल एवं दूरी	16	47-52
16.	बीजगणित	19	53-54
17.	क्रमचय, संचय तथा प्रायिकता	10	55-57
18.	रेखा और कोण	11	58-61
19.	वृत्त	12	62-64
20.	चतुर्भुज	16	65-67

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
21.	क्षेत्रमिति	13	68-75
22.	समान्तर श्रेढ़ी	12	76-77
23.	निर्देशांक ज्यामिति	10	78-79
	प्रश्न संख्या : 361		

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
8. हिंदी			
1.	अपठित गद्यांश	35	1-3
2.	अपठित पद्यांश	30	4-5
3.	हिंदी वर्णमाला एवं वर्णों के उच्चारण स्थान	20	6-8
4.	वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ	25	9-10
5.	पद भेद : संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय अविकारी शब्द	31	11-20
6.	लिंग, वचन तथा कारक	31	21-23
7.	शब्द–भेद : रूढ़, यौगिक, योगरूढ़, तत्सम–तद्भव एवं देशज–विदेशज शब्द	21	24-25
8.	पर्यायवाची शब्द	30	26-27
9.	विलोम शब्द	35	28-29
10.	अनेक शब्दों/वाक्यांश के लिए एक शब्द	25	30-31
11.	वाक्य संरचना : वाक्य के भेद (रचना के आधार पर, अर्थ के आधार पर), वाक्य विश्लेषण, संश्लेषण एवं रूपांतरण	27	32-36
12.	वाक्य रचना सम्बन्धी अशुद्धियाँ	25	37-38
13.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	20	39-40
14.	संधि	30	41-44
15.	समास	30	45-47
16.	उपसर्ग–प्रत्यय	40	48-51
	प्रश्न संख्या : 455		

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
9. English			
1.	Reading : Unseen Passage-Prose/Poetry (Factual, Descriptive or Literary) to Access Comprehension, Interpretation, Inference and Vocabulary-Synonyms & Antonyms	50	1-5
2.	Noun : Kinds of Noun, Number & Gender	30	6-10
3.	Pronoun	25	11-13
4.	Verb & Subject Verb Agreement	25	14-17
5.	Adjectives	16	18-19
6.	Use of Degree of Comparison	24	20-22

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
7.	Adverbs	25	23-24
8.	Preposition	26	25-27
9.	Conjunction	25	28-30
10.	Determiners	15	31-33
11.	Prefix and Suffix	16	34-37
12.	One Word Substitution	30	38-39
13.	Tense	20	40-50
14.	Transformation of Sentences-Affirmative, Negative, Interrogative, Kind of Sentences-Simple, Compound & Complex Sentences	26	51-58
	प्रश्न संख्या : 353		

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
10. कम्प्यूटर		30	1-31

उत्तरमाला

हर विषय के अध्याय के अभ्यास प्रश्नों की उत्तरमाला

इकाई	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	इतिहास	1
2.	भूगोल	1-2
3.	नागरिक शास्त्र	2
4.	विज्ञान	2
5.	मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान	2-4
6.	तर्कशक्ति	4-7
7.	विश्लेषणात्मक क्षमता	7-10
8.	हिंदी	10-12
9.	English	13-14
10.	कम्प्यूटर	14

Extra Study Material e-book (Download this Free e-book)

ई-बुक का Content :-

- तर्कशक्ति एवं विश्लेषणात्मक क्षमता के व्याख्यात्मक हल की ई-बुक

- Big Discount Coupon
  ('www.examcart.in' वेबसाइट से पुस्तकें खरीदते समय इन Coupon Code का इस्तेमाल करें और बेस्ट डिस्काउंट पाएँ।)

Link Expire
होने से पहले QR Code को स्कैन करके e-book को Download कर लें।

ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

नोट: पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए QR Code को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर "View PDF" पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो Extra Study Material ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ।

सामान्य हिंदी (Text Book)

Competitive गणित (Text Book)

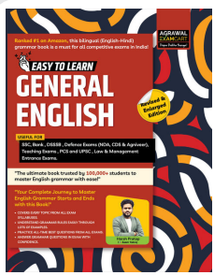

GENERAL ENGLISH (Text Book)

Comprehensive सामान्य ज्ञान (Text Book)

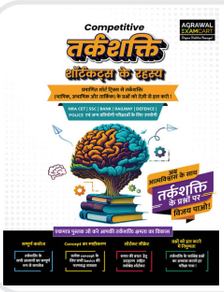

Competitive तर्कशक्ति (Text Book)

वस्तुनिष्ठ हिंदी व्याकरण एवं साहित्य (Question Bank)

वस्तुनिष्ठ कम्प्यूटर जागरूकता (Question Bank)

STATIC GK (Text Book)

Objective STATIC G.K. (Question Bank)

अध्याय 1

प्राचीन भारत का इतिहास

इतिहास और उसके स्रोत

- इतिहास कालानुक्रमिक रूप से पिछली घटनाओं का अध्ययन है। इतिहास हमें उन प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है जिन्होंने प्रारंभिक मानवों को अपने पर्यावरण पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त करने और वर्तमान समय की सभ्यताओं को विकसित करने में सक्षम बनाया।
- **इतिहास का विभाजन:** इतिहास को आम तौर पर तीन समय अवधियों में विभाजित किया जाता है – प्रागैतिहास, आद्य–इतिहास और इतिहास।
  - **प्रागैतिहास:** प्रागैतिहासिक काल वह समय है जब लेखन का आविष्कार नहीं हुआ था। इसलिए इस काल का कोई लिखित अभिलेख उपलब्ध नहीं है। प्रागैतिहास का हमारा ज्ञान पूरी तरह से पुरातत्व पर आधारित है। पुरातत्वविद् इस काल के बारे में जानने के लिए अतीत के भौतिक अवशेषों जैसे बर्तन, आभूषण, औजार, सिक्के, हड्डियाँ आदि का अध्ययन करते हैं।
  - **आद्य–इतिहास:** यह वह काल है जिसके लिखित अभिलेख तो हमारे पास उपलब्ध हैं लेकिन वे बहुत कम हैं और पढ़े नहीं जा सकते। अतः इस काल की भी जानकारी के मुख्य स्रोत पुरातात्विक स्रोत ही हैं। इस अवधि के लिए एक उदाहरण सिंधु घाटी सभ्यता है।
  - **इतिहास:** लेखन के आविष्कार के बाद के समय को इतिहास कहा जाता है। प्रारंभिक लेखन चट्टानों, स्तंभों, ताम्रपत्रों, शिला लेखों, ताड़ के पत्तों और भूर्ज वृक्षों की छालों पर किया जाता था। हालांकि इनमें से अधिकांश साक्ष्य समय के साथ नष्ट हो गए हैं, जो बचे हैं वे सूचना के समृद्ध स्रोत हैं।

प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ

आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान पुरातात्विक प्रणाली में तीन मुख्य युग शामिल हैं – पाषाण युग, कांस्य युग और लौह युग। युगों का वर्गीकरण 1818 और 1820 में डेनिश पुरातत्वविद् क्रिश्चियन जुर्गेसन थॉमसन द्वारा विकसित किया गया था। कृपया ध्यान दें कि लिपि के विकास से पहले की अवधि को प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। इसे पाषाण युग भी कहा जाता है।

नवपाषाण (9000 – 1000 ईसा पूर्व/खाद्य उत्पादक): इस युग के दौरान, शिकारियों ने कृषि के बारे में सीखा। सबसे पहले उन्होंने जंगली फसलें इकट्ठी कीं। लगभग 10,000 साल पहले उन्होंने अनाज, फल और सब्जियों का उत्पादन शुरू किया। उन्होंने सींग, पत्थर और लकड़ी से एक हल बनाया और झुंड के जानवरों की मदद से जमीन पर खेती करना शुरू कर दिया। वे अनाज पीसने के लिए पत्थर के ओखली और मूसल का इस्तेमाल करते थे।

मनुष्य द्वारा प्रयोग किया जाने वाला पहला अनाज जौ था।

सिंधु घाटी सभ्यता

- **सिंधु सभ्यता:** सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता भारत में शहरीकरण के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यह सभ्यता 'कांस्य युग' की थी। यह सभ्यता भारत और पाकिस्तान में 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान–ईरान सीमा शोर्तुगई (अफगानिस्तान) उत्तर में आलमगीरपुर (भारत में उत्तर प्रदेश) पूर्व में और दक्षिण में दैमाबाद (भारत में महाराष्ट्र) वे सीमाएँ हैं जिनके साथ हड़प्पा संस्कृति का विस्तार रहा है। इसकी अधिक संघनन गुजरात, पाकिस्तान, राजस्थान और हरियाणा के क्षेत्रों में पाया जाता है।
  - हड़प्पा, उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक और सिंधु नदी के तट पर, खोजा जाने वाला पहला शहर था। सिंधु नदी के तट पर फलने–फूलने के कारण इसे ''सिंधु घाटी सभ्यता" का नाम दिया गया ।
  - हड़प्पा संस्कृति को विभिन्न चरणों अर्थात् प्रारंभिक हड़प्पा (3000–2600 ईसा पूर्व), परिपक्व हड़प्पा (2600–1900 ईसा पूर्व) और उत्तर हड़प्पा (1900–1700 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।
  - 1924 में एएसआई के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (खुदाई की जाने वाली पहली साइट) के बीच कई सामान्य विशेषताएं पाईं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक बड़ी सभ्यता का हिस्सा थे। मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक स्थल को 1980 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- **सिंधु सभ्यता की समय अवधि**
  - **भौगोलिक सीमा:** दक्षिण एशिया
  - **अवधि:** कांस्य युग
  - **समय:** 3300 से 1900 ईसा पूर्व (रेडियोकार्बन डेटिंग पद्धति का उपयोग करके निर्धारित)
  - **क्षेत्र:** 13 लाख वर्ग किमी
  - **शहर:** 6 बड़े शहर
  - **गांव:** 200 से अधिक
- **हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल**
  - **हड़प्पा** रावी के तट पर पंजाब के साहीवाल जिले में स्थित है। 1921 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मोहनजोदड़ो सिंध के** लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। 1922 में इसकी खुदाई की गई थी। यह इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
  - **अमरी** सिंधु नदी के तट पर, बलूचिस्तान में स्थित है। 1935 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **लोथल** गुजरात में खंभात की खाड़ी के पास भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1953 में की गई थी। यह अपने डॉकयार्ड के लिए जाना जाता है।
  - **धौलावीरा** गुजरात में कच्छ के रण में स्थित है। 1985 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **कालीबंगन** राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। 1953 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मांडा** चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। 1976–77 में इसकी खुदाई की गई थी।

- **कोटदीजी** पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। 1955 और 1957 में इसकी खुदाई की गई थी।
- **चन्हूदड़ो** सिंध, पाकिस्तान में स्थित है और 1931 में इसकी खुदाई की गई थी।
- शोर्तुघई और मुंडिघाक स्थल अफगानिस्तान में स्थित हैं।

- **हड़प्पा सभ्यता की अनूठी विशेषताएँ:**
  - व्यवस्थित नगर–नियोजन 'ग्रिड सिस्टम' की तर्ज पर योजना
  - निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग
  - भूमिगत जल निकासी प्रणाली (धौलावीरा में विशाल जलाशय)
  - किलेबंद दुर्ग (अपवाद – चन्हूदड़ो)

क्या आप जानते हैं?

★ प्राचीन काल में सिंधु सभ्यता क्षेत्र को सुमेरियन लोग मेलुहा कहते थे । सुमेरियन अभिलेख बहरीन को दिलमुन और मकरान तट को माकन के रूप में संदर्भित करते हैं।

- **लिपि:** सिंधु घाटी की लिपि चित्रात्मक थी। यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। लेखन बुस्ट्रोफेडन था और वैकल्पिक पंक्तियों में दाएँ से बाएं और बाएँ से दाएँ लिखा जाता था।
- इस काल में प्रायः मृतकों को दफनाया जाता था।

वैदिक युग (1500–600 ईसा पूर्व)

- सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद, 1500 ईसा पूर्व के आसपास आर्यों द्वारा भूमि पर कब्जा कर लिया गया था। आर्यन शब्द का अर्थ है 'कुलीन' होता है।
- उनके कब्जे वाली भूमि को 'सप्त सिंधु' कहा जाता था जिसका अर्थ है 'सात नदियों की भूमि'। सात नदियों में सिंधु (सिंधु), वितस्ता (झेलम), आक्सिनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (व्यास), शुतुद्री (सतलज) [सभी पंजाब में], और राजस्थान में सरस्वती (सरसुती) शामिल हैं। अन्य नदियाँ राजस्थान में दृषद्वती (घग्गर), गोमती (गोमल) उत्तर प्रदेश कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वाति), क्रुमु (कुर्रम) [सभी अफगानिस्तान में] थीं।

समय, प्रसार और स्रोत	
भौगोलिक सीमा	उत्तर भारत
अवधि	लौह युग
समय	1500 ईसा पूर्व (बीसीई) – 600 ईसा पूर्व (बीसीई)
सूत्रों का कहना है	वैदिक साहित्य
सभ्यता की प्रकृति	ग्रामीण

- ऐसा माना जाता है कि आर्यों ने 2000 ईसा पूर्व – 1500 ईसा पूर्व के दौरान कई लहरों के रूप में मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवास किया था। यह एशिया माइनर, तुर्की में पाए जाने वाले बोगाजकोई शिलालेख से सिद्ध होता है। इस शिलालेख में चार वैदिक देवताओं अर्थात् इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
- वैदिक युग को दो अवधियों में विभाजित किया गया है अर्थात् प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व) और बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)।
- **वैदिक साहित्य:** वैदिक साहित्य को दो श्रेणियों अर्थात् श्रुतियों और स्मृतियों में वर्गीकृत किया गया है।
  - **श्रुति:** वैदिक साहित्य को "श्रुति" के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह मौखिक रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानान्तरित की गई है। कृपया ध्यान दें कि 'श्रुति' शब्द का अर्थ है "सुनना"। श्रुतियों में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं।
    - **वेद:** इन्हें अपौरुषेय (मनुष्य द्वारा नहीं बल्कि ईश्वर–प्रदत्त) और नित्य (सभी अनंत काल में विद्यमान) कहा जाता है। जिनमें चार वेद हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
    - पहले तीन वेदों (ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद) को सामूहिक रूप से वेदत्रयी (वेदों की तिकड़ी) के रूप में जाना जाता है।
      - **ऋग्वेद:** ऋग्वेद भजनों (गीतों) का संग्रह है। यह दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसे 'मानवता का पहला वसीयतनामा' भी कहा जाता है। इसमें 1028 सूक्त हैं जिन्हें 10 मंडलों में विभाजित किया गया है।
      - छह मंडल (दूसरे से सातवें मंडल तक) को गोत्र/वंश मंडल (कुल ग्रंथ) कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि पहला और 10वां मंडल बाद में जोड़े गए। पुरुष सूक्त, जिसमें चार वर्णों अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की जानकारी मिलती है, 10वें मंडल में है। होत्री नामक पुरोहित द्वारा ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता था।
      - ऋग्वेद में हिमालय और हिंदुकुश पर्वतों को क्रमशः हिमवंत और मुंजवंत कहा गया है।
      - ऋग्वेद में 40 नदियों का उल्लेख है और नदी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है। इसमें पूर्व में गंगा और यमुना तथा पश्चिम में कुभा का उल्लेख है।
      - ऋग्वेद के अनुसार, सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित नदी थी जबकि सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। गंगा नदी का एक बार उल्लेख किया गया है जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख किया हुआ है।
      - **सामवेद:** यह मंत्रों की पुस्तक है और संगीत से सम्बन्धित है। इसमें 1549 सूक्त हैं और सभी सूक्त (75 को छोड़कर) ऋग्वेद से लिए गए हैं। सामवेद के मंत्रों का पाठ उप्रगाता किया जाता था।
      - **यजुर्वेद:** यह यज्ञ प्रार्थनाओं की एक पुस्तक है। अर्ध्वयु नामक पुरोहित द्वारा यजुर्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता है। इसके दो भाग हैं कृष्ण यजुर्वेद (संपूर्ण श्लोक) और शुक्ल यजुर्वेद (पद्य और गद्य दोनों में लिखित)।
      - अथर्ववेद (जादुई सूत्रों की पुस्तक), चौथा और अंतिम, वेद जिसमें बुराइयों और बीमारियों को दूर करने के लिए मंत्र दिये गये हैं। इसे लौकिक वेद भी कहा जाता है। बहुत लंबे समय तक इसे वेदों की श्रेणी में शामिल नहीं किया गया था।
    - **उपनिषद:** उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं। उन्हें आमतौर पर वेदांत कहा जाता है, क्योंकि इनकी रचना वेद के अंत में हुई थी। उपनिषदों की संख्या 108 है। बृहदारण्यक सबसे प्राचीन उपनिषद् है।

- **महाकाव्य:** मुख्य रूप से दो महाकाव्य (महाकाव्य) हैं–
  - **रामायण या आदि काव्य की** रचना वाल्मीकि ने की थी। यह दुनिया का सबसे पुराना महाकाव्य है। इसमें 7 कांडों में 24,000 श्लोक अर्थात् छंद (मूल रूप से 6,000, बाद में – 12,000, अंत में – 24,000) शामिल हैं। पहला और सातवाँ कांड नवीनतम जोड़ा थे।
  - **महाभारत की** रचना वेद व्यास ने की थी। यह दुनिया का सबसे लंबा महाकाव्य है। वर्तमान में, इसमें 1,00,000 श्लोक अर्थात छंद और 18 पर्व शामिल हैं, जिसमें पूरक के रूप में हरिवंश है। भगवद गीता महाभारत के भीष्म पर्व से ली गई है। शांति पर्व महाभारत का सबसे बड़ा पर्व (अध्याय) है। मूल रूप से इसमें 8,800 श्लोक थे और इसे जय संहिता के नाम से जाना जाता था। बाद में इसमें 24,000 श्लोक थे और इसे चतुरविंशती सहस्त्री संहिता / भरत के नाम से जाना जाता था। अंत में, इसमें 1,00,000 थे और इसे शतसहस्त्री संहिता / महाभारत के रूप में जाना गया।
- **पुराण:** 18 प्रसिद्ध पुराण हैं। मत्स्य **पुराण** प्राचीनतम पुराण ग्रन्थ है। अन्य महत्वपूर्ण पुराण भागवत पुराण, विष्णु पुराण और वायु पुराण हैं। वे विभिन्न शाही राजवंशों की वंशावली का वर्णन करते हैं।

महाजनपद काल (600 ईसा पूर्व–325 ईसा पूर्व)

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। इससे गंगा के मैदानों में लोगों के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक जीवन में परिवर्तन आया। उत्तरी भारत में एक नई बौद्धिक जागृति विकसित होने लगी। महावीर और गौतम बुद्ध ने इस नई जागृति का प्रतिनिधित्व किया।
- महाजनपदों की राजधानी और कुछ अन्य शहर, जो समृद्ध व्यापार के कारण फले–फूले, एक बार फिर भारत में शहरीकरण का युग लेकर आए। इसे 'द्वितीय शहरीकरण' के रूप में जाना जाता है।
- ये सोलह महाजनपद इस प्रकार थे:
  - **मगध (पटना, गया और नालंदा जिले)**
  - **अंग और वंगा (मुंगेर और भागलपुर)**
  - **मल्ल (देवरिया, बस्ती, गोरखपुर क्षेत्र)**
  - **वत्स (इलाहाबाद और मिर्जापुर)**
  - **काशी (बनारस)**
  - **कोसल (अयोध्या)**
  - **वज्जी (मुजफ्फरपुर और वैशाली)**
  - **कुरु (थानेश्वर, मेरठ और वर्तमान दिल्ली)**
  - **पाँचाल (पश्चिमी उत्तर प्रदेश)**
  - **मत्स्य (अलवर, भरतपुर और जयपुर)**
  - **अश्मक (नर्मदा और गोदावरी के बीच)**
  - **गांधार (पेशावर और रावलपिंडी)**
  - **कंबोज (पाकिस्तान का हजारा जिला, उत्तर–पूर्वी कश्मीर)**
  - **अवन्ति (मालवा)**
  - **चेदि (बुन्देलखण्ड)**
  - **शूरसेन (ब्रज मंडल)**

जैन धर्म और बौद्ध धर्म

- **जैन धर्म:** जैन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "जिन" से हुई है, जिसका अर्थ है स्वयं और बाहरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना। जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवित धर्मों में से एक है। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों को खुद के लिए आधार बनाता है।
  - एक 'तीर्थंकर', वह है जिसने अलग–अलग समय पर धार्मिक सत्य प्रकट किया। प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और अंतिम तीर्थंकर महावीर थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान जैन धर्म को महावीर के तत्वावधान में प्रमुखता मिली।
  - जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे।
  - वर्धमान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व (बीसीई) में वैशाली के पास कुंडग्राम में हुआ था। उनकी माता लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला थीं। उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन एक राजकुमार के रूप में बिताया और उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ। इस दंपति की एक बेटी हुई थी।
  - तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
  - वह लिच्छवियों का एक क्षत्रिय राजकुमार था, एक समूह जो वज्जी संघ का हिस्सा था। 30 वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर जंगल में रहने चले गए।
  - अपनी तपस्या के तेरहवें वर्ष में, उन्होंने उच्चतम ज्ञान या सर्वज्ञता (सब कुछ जानने या असीम रूप से बुद्धिमान होने की क्षमता) या सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया और जिन (विजेता), महावीर (महान नायक) और केवला के रूप में जाने जाने लगे। तत्पश्चात्, वह जिना बन गए जिसका अर्थ है 'सांसारिक सुख और आसक्ति पर विजय प्राप्त करने वाला'।
  - 30 साल के उपदेश के बाद, महावीर की 72 साल की उम्र में 527 ईसा पूर्व (बीसीई) में पावापुरी में मृत्यु हो गई।
- **त्रि–रत्न या तीन रत्न:** महावीर ने मोक्ष की प्राप्ति (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) और कर्म से मुक्ति के लिए तीन गुना मार्ग का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **सही विश्वास (सम्यक दर्शन):** महावीर की शिक्षाओं में विश्वास।
  - **सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान):** महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास।
  - **सही कार्य (सम्यक चरित्र):** यह महावीर के पाँच महान व्रतों यानी अहिंसा, ईमानदारी, दया, सच्चाई और दूसरों से संबंधित चीजों की लालसा या इच्छा नहीं करने के पालन को संदर्भित करता है।
- **जैन आचार संहिता / जैन धर्म के पाँच सिद्धांत:** महावीर ने अपने अनुयायियों से सदाचारी जीवन जीने को कहा। स्वस्थ नैतिकता से भरा जीवन जीने के लिए उन्होंने पाँच प्रमुख सिद्धांतों का पालन करने का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **अहिंसा** – किसी जीव को हानि न पहुँचाना
  - **सत्य** – सत्य बोलना
  - **अस्तेय** – चोरी न करना
  - **अपरिग्रह** – संपत्ति को स्वीकार न करना
  - **ब्रह्मचर्य** – ब्रह्मचर्य

- **जैन परिषद्:**
  - **प्रथम जैन परिषद्:**
    - यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
    - पूर्वों के स्थान पर 12 अंगों का संकलन किया गया था।
  - **दूसरी जैन परिषद्:**
    - यह 512 ईस्वी में वल्लभी (गुजरात) में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की थी।
    - इसने 12 अंग और 12 उपांगों के अंतिम रूप से संकलित किया गया था।
- **बौद्ध धर्म:** गौतम बुद्ध वर्तमान नेपाल में कपिलवस्तु के शाक्यों के एक क्षत्रिय कबीले के प्रमुख शुद्धोदन के पुत्र थे। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। चूँकि वे शाक्य वंश के थे, इसलिए उन्हें 'शाक्य मुनि' के नाम से भी जाना जाता था।
  - गौतम बुद्ध का जन्म 540 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के पास लुंबिनी गार्डन में हुआ था। उनकी माता, मायादेवी (महामाया) का उनके जन्म के कुछ दिनों के बाद निधन हो गया और उनका पालन–पोषण उनकी सौतेली माँ गौतमी ने किया। सांसारिक मामलों की ओर उनका ध्यान हटाने के लिए, उनके पिता ने सोलह वर्ष की आयु में उनकी शादी यशोधरा नामक राजकुमारी से कर दी। उन्होंने कुछ समय के लिए एक सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत किया और राहुल नाम का एक पुत्र हुआ।
  - वे "फोर ग्रेट साइट्स" के बाद तपस्वी बन गए। चार महान दृश्य 29 वर्ष की आयु में, सिद्धार्थ ने चार दुरूखद दृश्य देखे। वह थे:
    - एक बेपरवाह बूढ़ा जिसने चिथड़े, पहन रखे हैं अपनी झुकी हुई पीठ के साथ।
    - एक बीमार आदमी एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित है।
    - एक मृत आदमी को उसके परिजन रोते बिलखते श्मशानघाट में ले जा रहे हैं।
    - एक तपस्वी
  - वे वाराणसी गए और वहाँ अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। उन्होंने मगध और कोसल के राज्यों में प्रचार किया। बड़ी संख्या में लोग उनके अपने परिवार सहित उनके अनुयायी बन गए। पैंतालीस वर्षों के उपदेश के बाद, उन्होंने अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास) में 483 ईसा पूर्व (बीसीई) में अंतिम सांस ली।
- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**
  - **दुख (पीड़ा का सच):** बौद्ध धर्म के अनुसार, सब कुछ दुख है (सब्बम दुखम)। यह दर्द का अनुभव करने की क्षमता को संदर्भित करता है न कि केवल एक व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए वास्तविक दर्द और दुःख को।
  - **समुदाय (दुख के कारण):** तृष्णा (इच्छा) दुख का मुख्य कारण है। हर दुख का एक कारण होता है और यह जीवन का एक हिस्सा और पार्सल है।
  - **निरोध (दुःख के अंत) :** निर्वाणधनिर्वाण की प्राप्ति से पीड़ा/दुःख का अंत हो सकता है।
  - **अष्टांगिक–मार्ग (दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग):** दुख का अंत अष्टांगिक मार्ग में निहित है।

बौद्ध परिषदें

आयोजन	जगह	अध्यक्ष	संरक्षक राजा
पहला	राजगृह	महाकस्सप	अजातशत्रु
दूसरा	वैशाली	साबकमीरा/ सबाकामी	कालाशोक
तीसरा	पाटलिपुत्र	भोगाली पुत्ततिस	अशोक
चौथी	कश्मीर	वसुमित्र	कनिष्क

- **त्रिपिटक:** विनयपिटक में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के मठवासी जीवन पर लागू होने वाले आचरण और अनुशासन के नियम शामिल हैं।
  - सुत्तपिटक में बुद्ध के मुख्य शिक्षण या धम्म शामिल हैं। इसे पाँच निकायों या संग्रहों में विभाजित किया गया है।
  - अभिधम्म पिटक भिक्षुओं के शिक्षण और विद्वतापूर्ण गतिविधियों का एक दार्शनिक विश्लेषण और व्यवस्थितकरण है।
  - भगवान बुद्ध शिष्य मोग्गल्लान के अवशेष साँची स्तूप से पाये गए हैं। साँची स्तूप का निर्माण मौर्य शासक अशोक के समय हुआ था। बौद्ध स्तूप साँची में स्थित है।

मगध का उदय

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व से भारत का राजनीतिक इतिहास वर्चस्व के लिए चार राज्यों–मगध, कौशल, वत्स और अवंती के बीच संघर्ष का इतिहास है।
- मगध साम्राज्य अंततः सबसे शक्तिशाली साबित हुआ और एक साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहा।
- **हर्यंक वंश (544 ईसा पूर्व–412 ईसा पूर्व):**
  - **बिम्बिसार/श्रोणिक (544 ईसा पूर्व–492 ईसा पूर्व):** वह हर्यंक वंश के संस्थापक थे। बिंबिसार के निर्देशन में मगध का उत्थान हुआ।
    - वह उसी समय रहते थे जब गौतम बुद्ध थे। बिम्बसार ने अपनी विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने कौशल (कोसलदेवी/महाकोसला/कौशल सम्राट प्रसेनजीत की बहन), लिच्छवी (लिच्छवी प्रमुख चेतक की बहन चेल्लाना) और मद्र (मद्र सम्राट की पुत्री खेमा) की राजकुमारियों से विवाह किया।
    - कौशल के राजा प्रसेनजित की बहन से विवाह के बदले में उन्हें दहेज के रूप में काशी का एक हिस्सा प्राप्त हुआ।
    - उसने अंग पर विजय प्राप्त की। जब अवंती राजा प्रद्योत पीलिया से बीमार हो गए, तो उन्होंने अपने राज वेद जीवक को उज्जैन भेजा।
    - उसे श्रोणिक के नाम से जाना जाता था। वह पहला भारतीय राजा था जिसके पास एक नियमित और स्थायी सेना थी।
    - उन्होंने न्यू राजगृह शहर का निर्माण किया।
  - **अजातशत्रु/कुणिका (492 ईसा पूर्व – 460 ईसा पूर्व):** बिम्बिसार के बाद उसका पुत्र अजातशत्रु गद्दी पर बैठा। अपने पिता की हत्या करने के बाद अजातशत्रु सिंहासन पर बैठा।
    - अजातशत्रु ने अधिक मुखर दृष्टिकोण अपनाया। उसने अपने मामा, कौशल के राजा प्रसेनजित पर हमला करके, काशी पर पूर्ण अधिकार कर लिया और पहले के सौहार्दपूर्ण संबंधों को तोड़ दिया।
    - अजातशत्रु के आक्रमण का अगला लक्ष्य वज्जि महासंघ था। परंपरा के अनुसार, यह संघर्ष 16 वर्षों तक चला और वज्जि लोगों के बीच असंतोष के बीज फैलाकर, वह वज्जि को जीतने में सक्षम होने का एकमात्र तरीका था।

- **उदयिन (460 ईसा पूर्व–440 ईसा पूर्व):** अजातशत्रु का उत्तराधिकारी उसका पुत्र उदयिन था। उनका शासनकाल महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसने अपने पिता अजातशत्रु की हत्या कर सत्ता प्राप्त की थी तथा उसने राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया और सोन और गंगा नदियों के मिलन बिंदु पर पाटलिपुत्र शहर का निर्माण किया। उसके बाद उसके उत्तराधिकारी, नागदशक इस वंश का अन्तिम शासक था। मुंडा और नाग–दाश, जिनमें से सभी नेतृत्व करने में असमर्थ थे।

- **शिशुनाग वंश (412 ईसा पूर्व–344 ईसा पूर्व):** नागदशक शासन करने के योग्य नहीं था। इसलिए लोग निराश हो गए और शिशुनाग को अंतिम राजा का मंत्री था राजा के रूप में चुना। शिशुनाग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अवंती के प्रद्योत वंश का विनाश थी। परिणामस्वरूप, मगध और अवंती के बीच 100 वर्षों तक चले संघर्ष को रोक दिया गया। अवंती को बाद में मगध वंश में शामिल कर लिया गया।
  - कालाशोक (काकवर्ण) को शिशुनाग का उत्तराधिकारी बनाया गया। उसका शासनकाल महत्वपूर्ण था क्योंकि वैशाली (383 ई.पू.) में उसने द्वितीय बौद्ध संगीति का आह्वान किया था।
- **नंद वंश (344 ईसा पूर्व–323 ईसा पूर्व):** महापद्म ने शिशुनाग वंश को उखाड़ फेंका और राजाओं की एक नई पंक्ति नंदों की स्थापना की। महापद्म को पुराणों और पालि दोनों लेखों में उग्रसेन या एक महान सेना के मालिक और सर्वक्षत्रांतक या सभी क्षत्रियों के उन्मूलनकर्ता के रूप में संदर्भित किया गया है।

मौर्य काल (322 ईसा पूर्व–185 ईसा पूर्व)

- **राजधानी:** पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार)
- **सरकार:** राजतंत्र
- **ऐतिहासिक युग:** सी। 322 ईसा पूर्व (बीसीई) 187 ईसा पूर्व (बीसीई)
- **महत्वपूर्ण राजा:** चंद्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक
- **मौर्य शासक**
  - **चंद्रगुप्त मौर्य:** मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सबसे बड़ा साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में साम्राज्य की स्थापना की।
    - विष्णुगुप्त, जिन्हें बाद में चाणक्य या कौटिल्य के नाम से जाना गया, नंद राजा से अपमानित हुए थे। नदों को समूल नष्ट करने की कसम खाई। चंद्रगुप्त, शायद मैसेडोनिया के सिकंदर से प्रेरित होकर, एक सेना खड़ी कर रहा था और अपना खुद का राज्य स्थापित करने के अवसरों की तलाश कर रहा था।
    - सिकन्दर की मृत्यु का समाचार सुनकर चन्द्रगुप्त ने लोगों को इकट्ठा किया और उनकी सहायता से यूनानी सेना को खदेड़ दिया जिसे सिकन्दर ने तक्षशिला में छोड़ा था। फिर उन्होंने और उनके सहयोगियों ने पाटलिपुत्र की ओर कूच किया और 322 ईसा पूर्व (बीसीई) में नंद राजा को हराया। इस प्रकार मौर्य वंश की स्थापना हुई।
    - चंद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान, सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस, जिनका एशिया माइनर से लेकर भारत तक के देशों पर नियंत्रण था, ने सिंधु को पार किया परन्तु चंद्रगुप्त से हार गया। कहा जाता है कि सेल्यूकस के दूत, मेगस्थनीज, भारत में बना रहा और इंडिका नामक उसका ग्रंथ मौर्य राजनीति और समाज के बारे में एक उपयोगी रिकॉर्ड है।
    - भद्रबाहु, एक जैन भिक्षु, चंद्रगुप्त मौर्य को दक्षिण भारत ले गए। चंद्रगुप्त ने श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में साललेखन (जैन अनुष्ठान जिसमें एक व्यक्ति अपनी मृत्यु तक उपवास करता है) विधि से अपने प्राण त्याग दिए।
  - **बिन्दुसार :** उनका वास्तविक नाम सिहासेना था। वह चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र था। ग्रीक विद्वानों द्वारा उसे अमित्रोचेट्स (दुश्मनों का नाश करने वाला) के रूप में उल्लेखित किया है, जबकि महाभाष्य उन्हें अमित्रघात (शत्रुनाशक) के रूप में संदर्भित करता है।
  - **अशोक:** अशोक, चौथी शताब्दी ई.पू. में अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य के सबसे महान और शासकों में से एक थे। उन्हें राधागुप्त नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति (प्रधानमंत्री) का समर्थन प्राप्त था।
    - उन्हें 'देवनाम प्रिय' के रूप में जाना जाता था जिसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'। कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था। अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध लड़ा था। जब उसने हिंसा और रक्तपात देखा तो वह द्रवित हो गया और इसलिए उसने और युद्ध न करने का निर्णय लिया।
    - अशोक के शासन की परिभाषित घटना उसके शासनकाल के आठवें वर्ष में कलिंग (वर्तमान ओडिशा) के खिलाफ उसका अभियान था। यह मौर्यों का एकमात्र दर्ज सैन्य अभियान था।
    - अशोक नरसंहार से इतना तबाह हो गया था और पीड़ा से हिल गया था कि जिसने उसके दृष्टिकोण और मूल्यों को बदल दिया।
    - अशोक अपने आध्यात्मिक गुरु उपगुप्त से बेहद प्रभावित थे उन्हीं के प्रभाव में आकर वह बौद्ध बन गए और उनके नए-नए मूल्यों और विश्वासों की एक परम्परा को अपना लिया, जो शांति और नैतिक धार्मिकता या धम्म (संस्कृत में धर्म) के लिए उनके जुनून की पुष्टि करते हैं।
  - **अशोक के शिलालेख:** जेम्स प्रिंसेप, एक ब्रिटिश तत्वशास्त्री और औपनिवेशिक प्रशासक अशोक के शिलालेखों को समझने वाले पहले व्यक्ति थे। अशोक के ये अभिलेख बौद्ध धर्म के प्रथम मूर्त प्रमाण हैं।
  - **अशोक का धम्म:** 'धम्म' संस्कृत शब्द :धर्म' के लिए प्राकृत शब्द है। अशोक के स्तंभ शिलालेख II में धम्म का अर्थ समझाया गया है। धम्म में किसी देवता की पूजा, या यज्ञ का प्रदर्शन शामिल नहीं था। अशोक अपना कर्तव्य समझता था कि वह अपनी प्रजा को निर्देश दे और वह बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करे।
    - जो भिक्षु धम्म के बारे में पढ़ाने के लिए जगह–जगह जाते थे। उन्हें धम्म महामात्त कहा जाता था। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महिंद और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था। अशोक ने धम्म के संदेश को फैलाने के लिए धम्ममहाभात्त को पश्चिम एशिया, मिस्र और पूर्वी यूरोप में भी भेजा।
    - मौर्य काल में वस्तुओं के बाजार को पण्यपत्तन के नाम से जाना जाता था।

- विष्णु पुराण और स्कंद पुराण से जानकारी प्राप्त होती है कि मौर्य सूर्यवंशीय क्षत्रिय थे, और वे इक्याकुवंश से थे जिसमें भगवान राम पैदा हुए थे, यद्यपि एक ग्रन्थ विशाखदत्त कृत मुद्रा राक्षस ऐसा भी है जिसमें मौयों को 'वृषल' अर्थात् निम्न कुल का कहा गया है।
- पुराण स्रोत मौर्यों को शूद्रप्रयास्त–अधर्मक के रूप में वर्णित करता है। मौर्य काल में वंशानुगत सैनिकों को वर्धकी कहा जाता था, ये वे सैनिक होते थे जिनके पूर्वज भी मौर्य सेना में सैनिक के रूप में सेवा दे चुके होते थे। वर्धकी सैनिकों को मौर्य काल में विश्वसनीय और स्वामीभक्त माना जाता था।
- मौर्य काल में दोवारिका महल का वार्डन था। दोवारिका एक प्रकार का प्रशासनिक अधिकारी था जो सम्पूर्ण नगर प्रशासन (सामान्य) के लिए उत्तरदायी होता था, विशेष रूप से शाही सामान्य प्रशासन के सम्बन्ध में वह एक महत्वपूर्ण प्राधिकारी थी।
- पश्चिमी प्रान्त को शासित करने के लिये अशोक द्वारा नियुक्त फारसी तुषास्प था। तुषास्प ने ही चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा बनवाई गई सुदर्शन झील का पुननिर्माण अशोक के आदेश पर सौराष्ट्र में करवाया था।

गुप्त वंश

- गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी और उसका उत्तराधिकारी उनके पुत्र घटोत्कच था। यह राजवंश चंद्रगुप्त–प्रथम, और समुद्रगुप्त आदि जैसे शासकों के साथ प्रसिद्ध हुआ। कुछ महत्वपूर्ण गुप्त साम्राज्य के राजाओं का विवरण नीचे दिया गया है–
  - **श्री गुप्त:** गुप्त वंश के संस्थापक श्री गुप्त था। वह अपने घटोत्कच पुत्र के कारण स्वतंत्र होने में सफल हुआ था। इन दोनों को महाराज कहा जाता था।
  - **चंद्रगुप्त प्रथम (320 – 330 ईस्वी):** चंद्रगुप्त प्रथम, वह महाराजाधिराज (राजाओं के महान राजा) कहलाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली। उन्होंने उस परिवार की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
    - महरौली लौह स्तंभ अभिलेख में उसके व्यापक विजय अभियानों का उल्लेख है। चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त युग का संस्थापक माना जाता है जो 320 ईस्वी में उसके राज्यारोहण के साथ शुरू होता है।
  - **समुद्रगुप्त (330–380 ई.):** समुद्रगुप्त संभवतरू गुप्त वंश के शासकों में सबसे महान था। इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख समुद्रगुप्त के शासनकाल का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारतीय राजाओं के खिलाफ अभियान किया था।
    - समुद्रगुप्त में अश्वमेध यज्ञ किया। समुद्रगुप्त ने सोने और चाँदी के सिक्के जारी किए जिन पर 'अश्वमेध को पुनर्स्थापित करने वाले' की कथा अंकित थी। उनकी सैन्य उपलब्धियों के कारण समुद्रगुप्त को 'भारतीय नेपोलियन' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था।
  - **चन्द्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.):** समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य उत्तराधिकारी बना। वैवाहिक गठबंधनों के माध्यम से, चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजनीतिक शक्ति को मजबूत किया। चंद्रगुप्त द्वितीय ने कुबेरनागा से विवाह किया, वह मध्य भारत की एक नागा वंश की राजकुमारी थीं।
    - चंद्रगुप्त द्वितीय की सबसे बड़ी सैन्य उपलब्धि पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों के खिलाफ उसका युद्ध था। अपनी जीत के बाद, उसने घोड़े की बलि दी और सकारी की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ है, 'शकों का नाश करने वाला'। वह अपने को 'विक्रमादित्य' भी कहता था।
    - उज्जैन एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था और गुप्तों की वैक. लिपक राजधानी था। गुप्त साम्राज्य की महान समृद्धि विभिन्न प्रकार के सोने के सिक्कों से प्रकट होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था। फाहियान ने गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी है।
  - **कुमारगुप्त:** कुमारगुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र और उत्तराधिकारी था। उसने कई सिक्के जारी किए और उसके शिलालेख पूरे गुप्त साम्राज्य में पाए गए हैं। कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। कुमारगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की नींव रखी जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के संस्थान के रूप में उभरा। 'पुष्यमित्र' नामक शक्तिशाली धनी जनजाति ने गुप्त सेना को उसके शासनकाल के अंत में हराया था।
  - **स्कंदगुप्त:** मध्य एशिया के हूणों की एक शाखा ने हिंदू कुश पर्वतों को पार करने और भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया। स्कंदगुप्त जिसने वास्तव में हूणों के आक्रमण का सामना किया था। उसने हूणों के खिलाफ विजय प्राप्त की और साम्राज्य को बचाया तथा उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दिया।

गुप्तोत्तर काल

- गुप्तों और वाकाटक शासकों के पतन के साथ राजनीतिक स्थिति जटिल हो गई। गुप्तों के सामंत उत्तर में स्वतंत्र हो गए। दक्कन और सुदूर दक्षिण में भी स्वतंत्र हुई शक्तियों की बहुलता देखी गई।
- गुप्तों के पतन से लेकर हर्ष के उदय तक भारत में राजनीतिक परिदृश्य विस्मयकारी था। कुछ समय तक बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन होता रहा। गुप्तों की विरासत के लिए छोटे–छोटे राज्यों में आपस में होड़ मच गई। उत्तरी भारत को मगध के बाद के गुप्तों, मौखरियों, पुश्य भूतियों और मैत्रकों के चार राज्यों में विभाजित किया गया था। मौखरियों ने सर्वप्रथम कन्नौज के आसपास पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर अधिकार किया। धीरे–धीरे उन्होंने बाद के गुप्तों को पराजित कर उन्हें मालवा में स्थानांतरित कर दिया।
- **पुष्यभूति वंश:** पुष्यभूति या वर्धन वंश की स्थापना थानेसर (कुरुक्षेत्र जिला) में पुष्यभूति द्वारा संभवतः 6वीं शताब्दी की शुरुआत में की गई थी। पुष्यभूति गुप्तों के सामंत थे, लेकिन हूणों के आक्रमणों के बाद वे स्वतंत्र हो गए।

- राजवंश का पहला महत्वपूर्ण शासक प्रभाकर वर्धन (580–605 ई.) था। प्रभाकर वर्धन ने अपने सबसे बड़े पुत्र राज्यवर्धन (605–606 ईस्वी) को उत्तराधिकारी बनाया गया था, राज्यवर्धन को 606 ईस्वी में शशांक द्वारा मार डाला गया था।
- हर्षवर्धन का जन्म 590 ई. में स्थानेश्वर (थानेसर, हरियाणा) के राजा प्रभाकर वर्धन के यहाँ हुआ था। वह पुष्यभूति से संबंधित था जिसे वर्धन वंश भी कहा जाता था। वह एक हिंदू थे जिन्होंने बाद में महायान बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उनका विवाह दुर्गावती से हुआ था।
- उनकी एक बेटी और दो बेटे थे। उनकी बेटी ने वल्लभी के मैतक वंश के एक राजा से विवाह किया था, जबकि उनके बेटों को उनके ही मंत्री ने मार डाला। चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपने लेखन में राजा हर्षवर्धन के कार्यों की प्रशंसा की।
- प्रभाकर वर्धन की मृत्यु के बाद, उनका बड़ा पुत्र राज्यवर्धन थानेसर के सिंहासन पर बैठा। हर्ष की एक बहन थी, राज्यश्री जिसका विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ था। गौड़ शासक शशांक ने ग्रहवर्मन को मार डाला और राज्यश्री को बंदी बना लिया।
- इस घटना ने राज्यवर्धन को शशांक के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। लेकिन शशांक ने राज्यवर्धन को मार डाला। इसके बाद युद्ध के मैदान में ही 16 वर्षीय हर्षवर्धन को 606 ईस्वी में थानेसर की पर बैठने का अवसर मिला। उसने अपने भाई की हत्या का बदला लेने और अपनी बहन को बचाने की कसम खाई।
- इसके लिए उसने कामरूप के राजा भास्करवर्मन के साथ संधि की। हर्ष और भास्करवर्मन ने शशांक के खिलाफ अभियान किया। अंततः शशांक बंगाल भाग गया और हर्ष कन्नौज का भी राजा बना।
- **हर्ष का साम्राज्य:** कन्नौज को प्राप्त करने पर, हर्ष ने थानेसर और कन्नौज दो राज्यों को एकजुट किया। वह अपनी राजधानी कन्नौज ले गया। गुप्तों के पतन के बाद उत्तर भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया था। परन्तु हर्ष अपने नेतृत्व में उनमें से कई को एकजुट करने में सफल रहा।
- पंजाब और मध्य भारत पर उसका अधिकार था। शशांक की मृत्यु के बाद उसने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर अधिकार कर लिया। उन्होंने गुजरात के वल्लभी राजा को भी हराया। यद्यपि (हर्ष की बेटी और वल्लभी राजा ध्रुवभट्ट के बीच विवाह से वल्लभी राजा और हर्ष में समझौता हो गया और दोनों राज्यों में मित्रता हो गई।)
- हालाँकि, दक्षिण को जीतने की हर्ष की योजना अधूरी रह गई जब चालुक्य राजा, पुलकेशिन द्वितीय ने 618–619 ईस्वी में हर्ष को हराया, इसने नर्मदा नदी के रूप में हर्ष की दक्षिणी क्षेत्रीय सीमा को सीमित कर दिया।
- **हर्ष की मृत्यु:** हर्ष की मृत्यु 41 वर्ष तक शासन करने के बाद 647 ई. में हुई। चूँकि वह बिना किसी उत्तराधिकारी के मर गया, इसलिए उसकी मृत्यु के तुरंत बाद उसका साम्राज्य बिखर गया।

क्या आप जानते हैं?

- ★ मौर्यों के शासन / प्रशासन की जानकारी के लिये जितना महत्त्वपूर्ण कौटिल्य का अर्थशास्त्र है, गुप्त प्रशासन के सम्बन्ध में जानकारी के लिये उतना ही महत्वपूर्ण कामंदका का ग्रन्थ निटिसारा है।
- ★ भगवान विष्णु की प्रतिमा उनके वराह अवतार में म. प्र. के एरण शहर से मिली है। एरण से ही गुप्त वंश के महानतम शासक समुद्र का शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिसे कनिंघम ने खोजा था।
- ★ समुद्रगुप्त, गुप्त सम्राट को ल्यूट/वीणा बजाने के रूप में उसके सिक्कों पर दर्शाया गया है
- ★ मंदसौर स्तम्भलेख में यशोधर्मन शासक की विजय अंकित है, यह एक प्रशस्ति के रूप में है।
- ★ चन्देल वंश द्वारा खजुराहो का निर्माण किया गया था। चन्देल वंश की स्थापना चन्द्रवर्मन (नन्नुक) द्वारा की गयी थी।
- ★ राजा भोज परमार राजवंश से थे राजा भोज परमार वंश के महानतम शासक थे। परमार वंश की स्थापना 9वीं शताब्दी में उपेन्द्र या कृष्णराज द्वारा की गयी थी।
- ★ यूनानी इतिहासकार 'हेरोडोट्स' को 'इतिहास के जनक' के रूप में जाना जाता है। हेरोडोटस ने हिस्टोरिका 'Historica' नामक पुस्तक लिखी।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन–सी पुस्तक महान विद्वान भवभूति द्वारा नहीं लिखी गई है?
(A) महावीरचरित (B) मालतीमाधव
(C) उत्तरमचरित (D) रामचरितम्

2. सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल कौन–सा है?
(A) राखीगढ़ी (B) कालीबंगा
(C) लोथल (D) मांडा

3. निम्नलिखित हड़प्पा सभ्यता स्थलों में से कौन-सा स्थल सीढ़ीदार दीर्घाओं के साथ एक बड़े खुले मैदान, जिसे 'स्टेडियम के रूप में पहचाना गया, की उपस्थिति के प्रमाण दर्शाता है?
(A) मोहनजोदड़ो (B) कालीबंगा
(C) धोलावीरा (D) चुहन्दड़ो

4. प्राचीन भारत में व्यापारी काफिलों के नेता को... .....कहा जाता था।
(A) प्रथम कुलिका
(B) महा–दंड–नायक
(C) संधि–विग्राहक
(D) सार्थवाह

5. निम्नलिखित में से किसे दर्शन की 'सांख्य' प्रणाली की स्थापना का श्रेय दिया जाता है?
(A) व्यास (B) कपिल
(C) गौतम (D) कणाद

6. जैन विद्वान मेरुतुंग ने किस वर्ष में 'प्रबंध चिंतामणि' का संकलन किया।
(A) 1304 ई. (B) 1207 ई.
(C) 1406 ई. (D) 1608 ई.

7. पार्श्वनाथ ..... जैन तीर्थंकर थे।
(A) दसवें (B) तेईसवें
(C) चौबीसवें (D) प्रथम

8. जनपद काल के दौरान, 'विष' शब्द का अर्थ··· ····· होता था।
(A) साधारण लोग (B) दुश्मन
(C) शाही अधिकारी (D) पुजारी

9. सिकंदर की मृत्यु के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा पराजित हुए सिकंदर के सेनापति का नाम क्या था?
(A) टॉलेमी (B) सेल्यूकस निकेटर
(C) एंटीगोनस (D) कैसेंडर

10. मेगस्थनीज के अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य के शासन काल में समाज ..... जातियों में विभाजित था।

(A) 6 (B) 4
(C) 5 (D) 7

11. मौर्य साम्राज्य के पूर्वी भारतीय प्रांत की राजधानी ..... में थी।
(A) सुवर्णगिरी (B) तक्षशिला
(C) तोसलि (D) उज्जैन

12. गौतमी पुत्र शातकर्णी, निम्नलिखित में से किस राजवंश का शासक था?
(A) पल्लव (B) चालुक्य
(C) शक (D) सातवाहन

13. ..... 10 मंडलों में विभाजित 1,028 ऋचाओं का संग्रह है।
(A) यजुर्वेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) सामवेद

14. भारतीय का नाम जो मोहनजोदड़ो की खोज के साथ जुड़ा था–
(A) आर. डी. बनर्जी (B) आर. डी. चटर्जी
(C) डब्ल्यू. सी. बनर्जी (D) एस. एन. बनर्जी

15. सिंधु–सभ्यता का प्राचीन बंदरगाह कौन–सा था?
(A) हड़प्पा (B) लोथल
(C) धोलावीरा (D) सुरकोटड़ा

16. वेदों की कुल संख्या है–
(A) चार (B) सात
(C) पाँच (D) तीन

17. दिगंबर और श्वेतांबर इनमें से किस भारतीय धर्म की उप–परंपराएँ हैं?
(A) जैन धर्म (B) बुद्ध धर्म
(C) हिन्दू धर्म (D) सिख धर्म

18. भारत में नवपाषाण युग के दौरान लोगों द्वारा किस धातु का उपयोग किया जाता था?
(A) ताँबा (B) चाँदी
(C) सोना (D) लोहा

19. भारत भवन इमारत में कितने खण्ड हैं?
(A) 8 (B) 7
(C) 6 (D) 5

20. 600 ई.पू.–325 ई.पू. के महाजनपद काल के दौरान बौद्ध और जैन साहित्य में कितने महाजनपद थे?
(A) 12 (B) 16
(C) 14 (D) 18

21. मौर्य काल में वस्तुओं के बाजार को ..... के नाम से जाना जाता था।
(A) पण्यपत्तन (B) प्रदेसा
(C) वाहीकपथा (D) खार्वटिक

22. मौर्य काल की दोवारिका ..... था/थी।
(A) पैलेस का/की वार्डन
(B) रॉयल घरेलू नियंत्रक
(C) विदेश मामलों के विभागाध्यक्ष
(D) जेल अधीक्षक

23. निम्नलिखित में से कौन-सा स्रोत मौर्यों को शूद्र. प्रयास्त.अधर्मक के रूप में वर्णित करता है?
(A) वामसथापक्सिनी (B) जातक
(C) धर्मशास्त्र (D) पुराण

24. पश्चिमी प्रांत को शासित करने के लिए अशोक द्वारा नियुक्त फारसी कौन था?
(A) तुषास्प (B) सूनासेपा
(C) प्लूटार्क (D) जस्टिन

25. निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य हमें सिंहासन पर चन्द्रगुप्त प्रथम के उत्तराधिकार के बारे में बताता है?
(A) देवीचन्द्रगुप्तम्
(B) मृच्छकटिका
(C) अभिज्ञान शाकुंतलम
(D) कौमुदी महोत्सव

❑❑